कोड- BSA-E511

सत्रीय परीक्षा-2021 (पंचम सत्र)

बी.ए. तृतीय वर्ष

विषय - संस्कृत

विवरण-संस्कृत परम्परा में धर्म दर्शन एवम् संस्कृति

समय-3 घण्टे **पूर्णांक:70**

उत्तीर्णक:40%

नोट:- प्रश्न-पत्र दो खण्डों 'अ' एवम् 'ब' में विभक्त है, दोनो खंड अनिवार्य हैं।

(खंड-अ)

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट;- किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए, प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है।

1 श्रीमद्भगवदगीता के परिप्रेक्ष्य में ब्रह्म क़े स्वरूप प्र प्रकाश डालिए।
2 पंच महायज्ञों की मानव जीवन मे उपयोगिता को समझाएँ।
3 आश्रम व्यवस्था में वर्णित ब्रह्मचर्य आश्रम की महत्ता को निरुपित कीजिए।
4 गुणत्रय के स्वरूप को प्रतिपादित करें।
5 मोक्ष के स्वरूप को वर्णित कीजिए।
6 मनुस्मृति के आधार पर अहिंसा के स्वरूप और महत्त्व को निरूपित कीजिए।
7 दार्शनिक मत के आधार पर ब्रह्म स्वरूप की विवेचना कीजिए।
8 त्रिविधऋण पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।
9 "नासतो विद्यते भावो ना भावो विद्यते सत:" इस वाक्य पर प्रकाश डालिए।
10 धर्मशास्त्रीय आधार पर सृष्टि उत्पत्ति विषय पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(खण्ड-ब)

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट: किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विस्तृत रूप में दीजिए, प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

1 श्रीमद्भगवदगीता के आधार पर "स्थितप्रज्ञ" के लक्षणों पर अपने विचार प्रस्तुत करें।
2 पाँच महायज्ञों पर विस्तारपूर्वक टिप्प्णी कीजिए।
3 मानव जीवन मे उपयोगिता के आधार पर पुरुषार्थ चतुष्टय के महत्त्व को निरूपित कीजिए।

4	त्रिविध कर्मों पर विस्तारपूर्वक चर्चा कीजिए।
5	मनुस्मृति के आधार पर धर्म को विवेचित करते हुए धर्म के लक्षणों पर प्रकाश डालिए।
6	सोलह संस्कारों के महत्त्व को विस्तृत रूप से प्रतिपदित कीजिए।
7	भक्ति योग का दैनिक जीवन में महत्त्व विस्तारपूर्वक समझाइए।
8	श्रीमद्भगवद्गीता के आधार पर कर्मवाद के सिद्धांत को प्रतिपादित कीजिए।